अंतरा-शब्दशक्ति

सपनों की उड़ान

काव्य संग्रह

अनिता मंदिलवार ''सपना''

सपनों की उड़ान

(काव्य संग्रह)

अनिता मंदिलवार 'सपना'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-86-5

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- अनिता मंदिलवार 'सपना'
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Sapno ki udan by Anita Mandilwar

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

लेखक की कलम से

कहते हैं सपनों की कोई उम्र नहीं होती, लेकिन यथार्थ में बदलने की समय सीमा जरूर होती है। हमारा हर पल किया गया कार्य ही जीवन की दशा और दिशा तय करता है।

जब लेखनी को पुस्तक का आकार मिल जाए वो पल बहुत ही सुखद होता है और इस सुखद एहसास देनेवाला है अंतरा शब्दशक्ति। जिसके माध्यम से मेरी काव्य संग्रह सपनों की उड़ान उड़ान भर सकी है।

मेरी कविताएँ यथार्थ और कल्पना से संबद्ध है। इस संग्रह को प्रकाशित करने में आदरणीया प्रीति सुराना जी, आदरणीया शिखा जैन जी, आदरणीय अर्पण जैन जी, प्रकाशन से जुड़े सभी का ह्रदय से आभारी हूँ।

काव्य संग्रह सपनों की उड़ान आपके हाथों में है। आपके प्रतिक्रिया का इंतजार हैं हमें। ऐसी प्रतिक्रिया जो सपनों को पंख दे सके!

अनिता मंदिलवार सपना

अनुक्रमणिका

1. शंख	7
2. मोड़	8
3. रक्षा सूत्र - स्नेह बंधन	9
4. प्रलोभन	10
5. कोयल	11
6. स्कूल चलें हम	12
7. सांकल एवं कुंडी	13
8. मन मयूरा	14
9. ईद	15
10. सपनों की उड़ान	16
11. वर्षों बाद	17
12. दृष्टि	18
13. आस्था	19
14. सम्मान	20
15. भूख	21
16. गौरैया	22
17. गोधूलि	23
18. हमदर्दी	24
19. स्त्री का जीवन	25
20. भोर	26
21. उलझन	27

22. जी लूँगी तेरे साथ 28
23. एक खत "माँ" के नाम 29
24. बिखराव 30
25. काश,..! 31
26. तुलसी 32

शंख

शंख गूँजा
और शब्द नभ पर छा गया
मंदिरों के पट खुले
धूप अगरबत्तियों की
खुशबू बिखरी
उठ अजानें चल पड़ी
मीनार से
चर्च से सरगमें
घंटियों की बज उठी
ग्रन्थसाहिब की गुरूवाणियाँ
हम तक पहुँच रही
और सुगंधित हो उठी
नवदिवस देखो यहाँ!
आस्थाएँ ही जगाती है
हमारी नवशक्तियाँ
अँगनाई सुरभित हुई
बागों में खिले फूल से
सपना के हाथ जुड़े
ईश्वर के सामने
करो कुछ ऐसा
हे प्रभु!
विश्व का कल्याण हो,...!

मोड़

मोड़
हाँ!
उसी मोड़ पर
खड़ी रही मै
अभी तक
जिस मोड़ पर
तुमने मुझसे विदा लिया
लौट आने के लिए
पर इतने बरसों बाद
आज तक प्रतीक्षारत है नयन
तुम्हारे आगमन की
राह देखती
तुमने बस विदा कहा था
अलविदा तो नही
मोड़ तो वही है
हाँ!
आसपास की रिक्तता भर गई है
खाली जगह पर बहुमंजिला इमारतें हैं
पर मेरे आँखो के अश्रु सूख चुके हैं
बस अब इन्तजार हैतुम्हारा
हाँ! ! तुम्हारा।

रक्षा सूत्र-स्नेह बंधन

भाई
हाँ! ये बसएक छोटा सा शब्द है
पर इसमें छिपा है बहन का अप्रतिम प्रेम
ये वही भाई समझ पाता है
जिसकी बहन नहीं होती
रक्षा के धागों के बिन
जब कलाई सूनी रह जाती है
जब पत्र से राखी भेजी
और तुमने कलाई पर बाँध ली
एक आत्मसंतोष चेहरे पर तेरे मेरे जो दिखे
वही तो स्नेह का बंधन है
बचपन में अगर कोई खेल-खेल में
रूठने मनाने वाला न हो
तो भाई हो या बहन
दोनों महसूस करते हैं एक दूसरे की कमी को
मुझे एक ऐसा भाई मिला जिसके दीदी भर कह देने से
मेरे मन में उमड़ आता है ढेरों प्यार
भले उसकी कलाई में मैंने रक्षा सूत्र न बांधे हो
पर उसके लिए है मन में अगाध प्रेम
वो भाई देश की सेवा में तत्पर है
मुझे ऐसे भाई पर नाज है
जिसकी दीदी होना मेरे लिए गर्व की बात है।

प्रलोभन

प्रलोभन एक ऐसा शब्द
जिस पर बिक जाते ईमान
इंसान इंसानियत भूलकर
बन जाते हैं तब हैवान

आसपास ही घूम रहे
इंसान की वेश में शैतान
जिनको कोई मतलब नहीं
उनका क्या है मान सम्मान

कड़वे घूंट पी पीकर
क्यूँ सहते हो अपमान
कदम बढ़ा प्रगति पथ पर
बना लो अपनी पहचान

बस अपनी ही अपनी सोचें
यहाँ! चलाते स्वार्थ की दुकान
दिखावा करें भलाई का वो
बना लें बहुमंजिला मकान

चप्पल घिस घिसकर कोई
भले होता रहे हलाकान
बेईमानी की हद है "सपना"
छोड़े न आदत बेईमान !

कोयल

कोयल की कूक से
गूँजे मीठी तान
वन की शोभा बढ़ाये
गाकर दादुर गान !

आम्र मंजर की खुशबू
फैले चारों ओर
प्यासा पथिक ढूँढता
नदी की जल धार !

पक्षी कलरव करते हैं
गूंजता चहुँ ओर
पुष्पों की सुगंध से
महका पोर पोर !

दिखने में काली है
पर बोली मीठी है
डाल डाल पर उड़ती
चिड़ियों की रानी है !

कोयल है बहुत सयानी
नानी ने सुनाई कहानी
तान सुनाकर वह तो
बनाती सबको दिवानी !

स्कूल चलें हम

सैर सपाटे हम भूलें
आलस पर धूल मलें
धमाचौकड़ी कर लें हम
आओ हम स्कूल चलें

नई कक्षा, नए बस्ते
प्यारे-प्यारे गुलदस्ते
हँसते गाते फूल चलें
आओ हम स्कूल चलें

रंग-बिरंगी तितली उडती
बारिश में धरती नहाती
आओ झूला झूल चलें
आओ हम स्कूल चलें

दोस्तों से मिलकर हम
मिलकर झूमें नाचें हम
घर सु कुछ दूर चलें
आओ हम स्कूल चलें

सावन सा बरसे हम
बादल सा गरजें हम
रोके से भी न रुकें हम
आओ हम स्कूल चलें

सांकल एवं कुंडी

यूँ तो
सांकल और कुंडी
का साथ
दीप और बाती के
समान है।
एक दूसरे के बिना
कोई अस्तित्व
नहीं है।
यूँ तो इनका बजना
किसी के आने का
संकेत है,
पर कभी ये
तेज हवा मे
ऐसे बज उठती हैं
जैसे भूचाल ने
दस्तक दी हो
तब हम अचानक
डर जाते हैं
एक आने वाले
अपरिचित आहट
के आने से
खासकर
जब हम अकेले हो
और तेज हवाओं
के आने से
बिजली भी गुल
हो गयी हो
और खासकर
तब भी जब हम
नींद के आगोश मे
हिचकोले ले रहें
होते है
और खूबसूरत सपना
देख रहें होते हैं
और
कुंडी और सांकल
बज उठते हो
और हम
हड़बड़ाकर
उठ बैठते है
चेहरे पर विस्मित
भाव लिए •••••

मन मयूरा

बजती रही रागिनी
तेरी अँगुलियाँ थिरकती रही
रात भर मन मयूरा नाच उठा
यूँ
जैसेमिल गया हो जहाँ सारा।
मदहोश मैं तेरी खुशबूओं में डूबी
चाँद की डोली
और
तारों की बारात
चाँदनी सज गयी ऐसे
बिना बजे सरगम जैसे।
सुरभित बयार ने कुछ कानों में कहा
और
हम-तुम खो गये सपनों में
लगे देखने सपना
एक ऐसा सपना
जिसमें मैं तुम और तुम मैं
हो गए हम
नयी दुनिया में खो गए।

ईद

दिल में चराग जलाने का दिन है।
आज बस झूम कर गाने का दिन है।।

आज दिल के सारे गम भुला दो।
खुशी से बज्म सजाने का दिन है।।

सब रहे सलामत दुनिया में दोस्तों।
दुआ के लिए हाथ उठाने का दिन है।।

आओ अब अंतस में भर लें उजास।
आज तो दोस्तों उजाले का दिन है।।

इंसानियत का पाठ है सबसे बड़ा।
पढ़कर, अपनाकर निभाने का दिन है

आज तो नज्म कागज पर उतर आई।
ऐसे भी ख्यालों में खोने का दिन है।।

ईद की सिवइयाँ, या होली के रंग।
मिलकर खुशियाँ बाँटने का दिन है।।

चाँद में खुदा का दिखे नूर "सपना"
आज तो बस ईद मनाने का दिन है।।

सपनों की उड़ान

बंद लिफाफे सी
हुई जिन्दगी
हँसे तो कैसे हँसे
गाँठ मन की खोले कैसे
दरीचे भी बंद हैं
गलियारों के नन्हें कदम
कैद हैं दीवारों के अंदर
बता भी दो
क्या करें अब
पर कुछ तो करना होगा
उन नन्हें कदमों की खातिर
मन की गाँठ
मन में न रहे
उनके खातिर
लिफाफा खोलना ही होगा
जिंदगी तभी हँसेगी
हाँ! तभी सपना की
सपनों की उड़ान पूरी होगी।

वर्षों बाद

वर्षों बाद सखियों से मिल हर्षित हुआ मन
यादों में भींग गया तन
बीते गलियारों की यादें अचानक उमड़ पड़ी
जो कहीं दबी थीं मन के कोने में
बर्षा की फुहारें शैलजा के संग
सविता की चमकती आँखे
और मंजू की चुलबुली शरारतें विभा के संग
सुमन, प्रिया की यादों के संग अनिता
याद आई शुभदा और नीतू जो हमारे बीच नही अब
पर हमारी यादों में हमेशा रहेंगे
उन्हीं खूबसूरत मुस्कान संग
हम दस थे, कभी बस
सच समय बीत गया जैसे एक युग
पर हम नहीं बदले
सभी के चेहरे चमकते दमकते से
यही कह रहे थे मानो
हम वही है पुकारो तो सही
एक आवाज पर दौड़ कर आयेंगे
जब तुम्हें हमारी जरूरत हो
सुनो सखियों हम भी वही हैं, हैं ना?
कहो तो सही, आजमाइशों के दौर में
सच्चे दोस्त को आजमाने की जरूरत नहीं ??
क्यों,..सही कहा न मैंने ---!

दृष्टि

हम क्या हैं
और आगे क्या होंगे
ये हमारी दृष्टि ही
तय करती है
हमारी सोच के रूप में
हमारे मन के
सकारात्मक
या
नकारात्मक
होने में
हमारी दृष्टि
महत्वपूर्ण भूमिका
अदा करती है।

आस्था

आस्था
धर्म पर हो या कर्म पर
ये अपने ऊपर निर्भर करता है
क्योंकि
आस्थाएँ ही बनाती है
नियम, कायदे
आस्था ही जगाती है
ईश्वर के प्रति भक्ति-भाव
हमारी आस्था ही
सिखाती है
त्याग-तप-संयम
हमारी आस्था ही पथ बताती है
सहज, सरल, सानंद प्रगति का
हमारी आस्था बहती है
सतत, अविरल नदी के मानिंद
और आस्था ही
इंसानियत के भाव उत्पन्न करती है
हमारी जैसी दृष्टि होगी
हम वही तक देख सकेंगे
हम मानव हैं
सभी एक समान हैं
और इंसान ही बनकर रहें।

सम्मान

तन से हूँ कमजोर भले ही, अपने लक्ष्य को पा सकती हूँ।
मन से बहुत मजबूत हूँ, अपना भार उठा सकती हूँ।।

दया दृष्टि नहीं चाहिए, देना है तो साथ चाहिए।
कंटक भरे रास्तों में, हाथों में तेरा हाथ चाहिए।।

बोलो कर सकते हो क्या, साथ दे सकते हो क्या।
मान दे सकते हो क्या, सम्मान दे सकते हो क्या।।

देना है तो नहीं दान चाहिए, बस अपना अभिमान चाहिए।
उड़ने को आसमान चाहिए, बस अपना स्वाभिमान चाहिए।।

जबाब चाहिए मुझे उनसे,मुझे जो कहते अभागी।
कौन है ऐसा संबल मन का, बन सके मेरा सहभागी।।

सपना पूरा करे मेरा, ऐसा कोई अपना चाहिए।
हर कदम पर साथ हो मेरे, मुझे सच्चा मीत चाहिए।।

भूख

भूख,..एक सामान्य सा शब्द
पर इसकी अनुभूति क्या इतनी ही सामान्य होती है।

जब पेट तप रहा हो भूख की आग में
तो अपने को असहाय पाती है।

एक अलग होती है
भूख जब ये आखों में देखी जाती है।

ये उससे पूछो जो इस भूख के आगे
सहमी हुई अपने को पाती है।

सामने वाले की आँखों की भूख
उसके मन को तार-तार कर जाती है।

वह घूरती आँखें उसका पीछा करती है
तब भी जब वह सपना देखती है।

अचानक उठकर बैठ जाती है
पसीने में नहाई हुई पूछने पर कुछ कह नहीं पाती है।

गौरैया

गौरैया
कोमल सी
प्यारी सी
छोटी सी चिड़िया।
फुदकती रहतीदिन भर
यहाँ! से वहाँ!
अकेले नहीं
हमेशा एक साथ
कई दिखती हैं
ये प्रतीक है
मिलनसारिता का
संदेश देती हैं
जो भी है
उसमें ही सभी
मिल जुल कर रहो।
आँगन में गौरैया का आना
चहचहाना
जीवन का प्रतीक है
उसका चहचहाना, फुदकना
सब यही सीख देता है
कि कुछ कर्म करते रहो
यही जीवन है।

गोधूलि

शहर से दूर
सूर्यास्त के साथ
गाँव की पगडंडियो में
आज भी
सांझ के समय दिख जाती है
गायें
वापस घर कोलौटती
उड़ती गोधूलि
और
थके किसान/पथिक
पर
उनके माथे पर
नहीं दिखती
पसीना
न चेहरे पर
लकीरों की सिलवटें
काम करके
लौटने का आनंद
अपनी गायों/बैलों के साथ नागर
कांधे पर रखे हुए
आपस में बतियाता
घर को लौट आते हैं !

हमदर्दी

न दया चाहिए, न ही हमदर्दी
न कोई रहम
तुम में करूणा का गर स्त्रोत हो
तो बस इन्सान बन जाओ।

एक ऐसा इन्सान
जिसमें बची हो इंसानियत
जो मदद करने को आतुर हो
किसी बेसहारा, मजलूम या अनाथ को।

हे इन्सान!
तुम्हारी थोड़ी सी इंसानियत से
किसी को जीवनमिले दुबारा
इससे अच्छा भला क्या होगा।

किसी का सपना पूरा कर सको
या सपने पूरे करने में
आगे बढ़कर मदद कर सको
ये सबसे अच्छी बात होगी।

तुम आँख मिला सको अपने जमीर से
और गर्व से कह सको
मैं इन्सान हूँ,..मुझमें है बची इंसानियत।

स्त्री का जीवन

सुबह सबेरे
जब वह जगती
काम में जुट जाती है।
घर का काम
पूरा होता नहीं
दफ्तर की ओर कदम बढ़ाती है।
दिन भर की दौड़ धूप
फिर घर वापसी
बहुत सारे काम
निपटाते हुए
जब घर पहुँचती
बच्चों की हँसी
देखकर थकान भूल जाती है।
इन सबके बीच
खुद को भूल गई
अपना वजूद
अपनी पहचान
और कुछ भी है जीवन में
ये भी भूल चुकी वो
क्या यही है
एक स्त्री का जीवन.....!

भोर

भोर के साथ
सूरज का आगमन
चिड़ियों की चहकन
पथिक का आचरण
सब देता है
कितना सुकून
कितनी यादें
भोर की
जगी हुई सी
स्वच्छ निर्मल
वातावरण
मन में भरता है
एक नई ऊर्जा
जो संचित होकर
दिन भर
देती रहती है
स्फूर्ति तन को
और
अविराम
चलकर
गंतव्य तक
पहुँच ही जाते हैं हम ---!

उलझन

सुनो तो जरा
चुप न रहो.
कह दो अपनी बात
उलझन कैसी
सब कुछ है अपने हाथ
चलो कदम बढ़ाओ
आओ
उलझनों को सुलझाए हम
गीत खुशी के
गाएँ हम
जी लें जिन्दगी अपनी
भरपूर
कोई गम न रहें
हमें
जिन्दगी जी लें हम
खुशियों के रस पी लें हम
सपना देखें
पूरा कर लें
ख़्वाब जी लें हम
हाँ! जी लें हम।

जी लूँगी तेरे साथ

आज मन उदास है
मेज पर पड़ी पुस्तक उठा ली
पढ़ने लगी मैं
और अपने जीवन को
ढूंढने लगी पुस्तक में।

कहीं कोई चरित्र
मुझ सा दिख जाये
ये क्या ये तो मैं ही हूँ
नाम भले कुछ अलग है
पर ये तो
मेरी ही कहानी है
हाँ!, मैं ही हूँ
तभी तो पढ़ने में
इस कदर मशगूल हो गई
रहा न होश
मेरी सुध-बुध खो गई।

बालों में सफेदी क्या आई
सभी ने छोड़ दिया
यहाँ! तक कि अपनों ने भी
सबको मैं
बोझ लगने लगी थी
सबने पीछा छुड़ाया
छोड़ दिया अकेले
पर पुस्तक तेरा धन्यवाद
तू आज भी मेरे साथ है।

पढ़ने-लिखने का शौक
बचपन से था
बहुत करीने से रखती थी
अलमारियों में सहेज कर
सच तूने अपना फ़र्ज
अदा किया
आज साथ है मेरे
सपने सतरंगी नहीं
तो क्या सपना बनकर
तेरी कहानियाँ
नींद में आयेंगी
और मुझे बहलायेंगी

जो जीवन शेष है
जी लूँगी तेरे साथ मैं
हाँ! जी लूँगी तेरे साथ मैं।

एक खत "माँ" के नाम

प्यारी माँ,
खत में
क्या लिखूँ
कैसे लिखूँ
कब लिखूँ
किसके लिए लिखूँ
सोंचती रही
बहुत देर तक
जिन्दगी तेरे लिए
या
दोस्तों के लिए
या
देश या समाज के नाम
या
अपने आदरणीय
गुरूजनों के लिए
और भी बहुत कुछ
याद आया
बहुत सोचा
पर कुछ समझ न आया
बस माँ ही याद आयी
मेरी प्यारी माँ
जिसने जिन्दगी दी
दोस्त बनकर साथ दिया
देश और समाज का
अर्थ समझाया
गुरूजनों को
सम्मान करना सिखाया
और सब
जो भी सोचा
सबमें माँ ही
प्रतिबिम्बित हुई
माँ आज नहीं हो पास
पर
दूर भी तो नहीं
मेरी अंतरात्मा में
मेरे हृदय तल में
बस तुम्ही तो हो
और हो भीक्यों न
तुमसे ही तो मैं हूँ
सच माँ!
तुम बहुत याद आती हो,..!

बिखराव

जिन्दगी को
कतरा-कतरा जीने का
दर्द झेल रही हूँ
सोचती हूँ
एक नई जिन्दगी बना लूँ
लेकिन
ऐसा कर पाना कठिन है
जिन्दगी का बिखराब
ऐसा है
जिसे समेट पाना मुश्किल है
मैंने जब भी
इसे समेटकर
जीने की कोशिश की है
तब और भी
बिखर गयी हूँ
बिखरती ही जा रही हूँ
जिन्दगी समेटकर
जीने के लिए नहीं है,
तोड़कर बिखेरने की चीज है
शायद.....!

काश,..!

काश! काश! काश!
ये शब्द क्यूँ है
जीवन में अगर ये न होता
जीवन के
मायने कुछ और ही होते
हाँ!
सच ऐसा कुछ होता
आश्चर्यजनक
और ये काश
उसके साथ ही बीत जाता
भूतकाल की तरह
और उसकी यादभी न होती
जो टीस मन को दे सके
क्या सही में ऐसा हो सकेगा
जबाब है
कहिए तो?
नही न...
यहीं आकर हम रूक जाते हैं
उस नदी की धार की तरह
जो हमेशा चलती रहती है अविराम....!

तुलसी

हरी भरी तुलसी का पौधा
घर आँगन में निखर रही
तुलसी की महिमा अपरंपार
गुणों की है ये भंडार
मन में दीप जले
बन ह्रदय की बाती
दिल की ज्योति
जगमग करती रहती
जड़ में छुपाये रहती
शांति, स्नेह की धारा
वायु ने जब छीना
तरू से जब पत्र सारा
पौधा तुलसी का
आँगन में हरियाता
जग सारा मैंया का
आराधना है करता
तुलसी को मानते पवित्र
जैसे इसमें भरे हो इत्र
गुणों की है ये खान
आँगन की है ये शान,..!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती अनिता मंदिलवार 'सपना'
जन्म - 04 फरवरी
शिक्षा - स्नातकोत्तर (वनस्पति शास्त्र, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य)
पता बी.एड., पी.जी.डी.सी.ए.
मो. - 9826519494
कार्यक्षेत्र - व्याख्याता शास.हाई स्कूल, असोला, अंबिकापूर (सरगुजा) छ.ग.
विधा - गद्य एवं पद्य (कविता, गज़ल, नाटक, रुपक, लेख, कहानी, हाइकु)
प्रकाशन 1. सांझा संकलन - हाइकु की सुगंध, काव्य अमृत, हिन्दी सागर पत्रिका, मातृभाषा, गज़ल संग्रह-गुंजन, कथा संकलन-कथा सेतु, कलमकार, नारी काव्य सागर, रवीना-मेरी कविताएं विशेषांक, निभा- कविता कहानी महाविशेषांक, वूमन आवाज, संकलन-(सृजन समीक्षा) अंतरा शब्द शक्ति
2. नवभारत, दैनिक भास्कर, लोकमत, अंबिकावाणी समाचार पत्र में कविता एवं लेख।
3. स्वर मंजी, सत्य ज्ञान समागम, व्यंजना में कविताओं का प्रकाशन।
सम्मान 1. काव्य अमृत सम्मान 2. हिन्दी सागर सम्मान 3. दोहा शतकवीर सम्मान
4. हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान 5. दोहा शतकवीर कलम की सुगंध सम्मान-2018।
6. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 7. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा साहित्य के दमकते दीप साहित्यकार सम्मान - 2017। 8.साहित्य संगम संस्थान दिल्ली द्वारा हिन्दी वीरांगना सम्मान-2018। 9. साहित्य संगम संस्थान दिल्ली द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान - 2018।
10. अर्णव कलश एसोसिएशन बाबू बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान - 2017।
11. साहित्य संगम संस्थान द्वारा साहित्य गौरव सम्मान।
12. विश्व रचनाकार मंच द्वारा नारी काव्य सागर सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-86-5
मूल्य- 55/-